ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

संतनगरी, ऋशिकेश की पौराणिकता से आधुनिकता की ऐतिहासिक गाथा

डॉ0 दयाधर प्रसाद सेमवाल

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग राजकीय स्नातकोतर महाविदयालय अगस्त्यमुनि रूद्रप्रयाग

उत्तराखण्ड का प्रवेश द्वार कहे जाने वाले व कुम्भनगरी हरिद्वार से मात्र 24 कि0मी0, की दूरी पर देवताओं की तपोभूमि, महान ऋशियों की कर्मस्थली, संतनगरी, ऋशिकेश अवस्थित है। यह स्थान वर्तमान में गढ़वाल मण्डल के तीन जनपदों (देहरादून, पौड़ी व टिहरी) के अन्तर्गत 30^0 6′ उत्तरी अक्षां I से 78^0 18′ देशान्तर रेखाओं के मध्य गंगा के दाहिने पार्व में समुद्र तट से 356 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। धार्मिक दृश्टि से ऋशिकेश का प्राचीन काल से ही महत्व रहा है। पतित–पावनी माँ गंगा के तट पर स्थित यह पौराणिक नगर हिन्दू धर्म के अनुयायियों के लिये धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। पुराणों में इस तीर्थ को ''कुब्जाम्रक'' कहा गया है, कुब्जाम्रक नामकरण का आधार यह कथा है कि यहाँ पर रैम्य ऋशि भगवान विश्णु की तपस्या कर रहे थे, तो भगवान ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर आम के पेड़ पर दर्शन दिये, भगवान विश्णु के आम के पेड़ पर बैठने से यह पेड़ झुककर 'कुबडडा' हो गया था। इस आम के पेड़ को प्रतीक मानकर यहाँ का पौराणिक नाम 'कुब्जाम्रक' पड़ा।

केदारखण्ड में यहाँ के लिए ''हृशीकेश'' शब्द का भी उल्लेख हुआ है। इसके बारे में वृतान्त है कि भगवान विश्णु ने रैम्य मुनि की तपस्या से प्रसन्न होकर कहा कि, मैं (विश्णु भगवान) 'कुब्जाम्रक' महातीर्थ में लक्ष्मी सहित निवास करूगा। तुमने इन्द्रियों को जीतकर मेरे दर्शन की प्रार्थना की थी, मैं यहाँ रहकर हृशीकेश (इन्द्रियों का स्वामी) कहलाऊँगा। इसलिए इस स्थान का नाम 'हृशीकेश' होगा। भगवान विश्णु का एक नाम हृशीकेश भी है, परन्तु बाद के समय में इस स्थान का विश्रुत नाम ऋशिकेश हो गया। ऋशिकेश नाम के सम्बन्ध में कहा जाता है कि भगवान राम ने त्रेता युग में ऋशि पर्वत पर तपस्या की थी, इससे यह स्थान ऋशिकेश कहलाया है। जबकि एक अन्य मत यह कहता है कि देव–दानवों के युद्ध में भगवान विश्णु ने राक्षसों का नाश कर ऋशियों को यहाँ भूमि प्रदान की थी। ऋशियों के निवास करने से यह स्थान ऋशिकेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

पौराणिक रूप से ''कुब्जाम्रक'' नाम से पुकारी गई नगरी ऋशिकेश जिसके बारे में कहा जाता है कि, ''यहाँ देवता मनुश्यों से आकर मिलते हैं''। (Rishikesh: where god meet man) का वास्तविक नाम हृशीकेश (Hrishikesh) ही रहा होगा जो कालान्तर में सम्भवतः वर्तनी में अपभ्रंश के कारण ऋशिकश हुआ होगा।

ऋशिकेश प्राचीन काल से ही संस्कृत, आध्यात्म, एवं ब्रह्य विद्या की केन्द्र स्थली रही है। यह वही स्थान है जहाँ सत्रहवें मनवन्तर में ऋशि रैम्य ने मात्र वायु का सेवन कर कठोर तपस्या से भगवान विश्णु को लक्ष्मी सहित यहाँ रहने के लिए वाध्य कर दिया था, वहीं त्रेता युग में भगवान राम ने रावण आदि दैत्यों के बध से प्रायश्चित व ब्रह्य हत्या की मुक्ति के लिए यहाँ तपस्या की थी। जहाँ लक्ष्मण ने निराहार रहकर शिव में मन को लगाकर बारह वर्शो तक शिव की आराधना की थी।

यहाँ पौराणिक काल में ही ऋशि–मुनियों के आश्रम स्थापित हो गये थे। मुनि वशिश्ट, विश्वामित्र, भारद्वाज, परशुराम आदि का यहाँ से सम्बन्ध रहा है। राजा धृतराश्ट्र, विदुर, धौम्य ऋशि भी यहाँ समय–समय पर आए, महाभारत काल में, पाण्डव गन्धमादन पर्वत (बद्रीनाथ) जाते समय इसी क्षेत्र से गुजरे थे। भगवान बुद्ध तथा उनके शिष्य अपने धर्म प्रचार के लिए ऋशिकेश आये थे। प्रथम जैन तीर्थंकर ऋशभ देव के पुत्र चक्रवर्ती भरत ने दिग्विजय के प्रसंग में ऋशिकेश के समीप ही राजा निमि की पुत्री सुभद्रा से विवाह किया था। मोग्गलिपुत्त तिस्स जो सम्राट अशोक के राज्यकाल में पाटलीपुत्र में हुई तृतीय बौद्ध संगति के अध्यक्ष थे, इसी क्षेत्र की उभीरध्वज नामक पहाड़ी पर निवास करते थे। यहाँ स्वामी रामतीर्थ तथा स्वामी विवेकानन्द जैसे महान आध्यात्मिक संत अपनी आध्यात्मिक ज्ञान पिपासा को भाान्त करने के लिए आये और यहाँ से अर्जित ज्ञान प्रवाह की गंगा से सम्पूर्ण विश्व को ज्ञानामृत प्रदान किया। धार्मिक दृश्टि से ऋशिकेश को साधारण भूमि न मानकर स्वर्ग की भूमि माना गया है, जिसके दर्शन मात्र से ही भव–बन्धनों से मुक्ति मिल जाती है।

महाभारत के वनपर्व में भी ''कुब्जाम्रक'' तीर्थ के दर्शन को सहस्त्र गोदान व स्वर्ग लोक की प्राप्ति के समान माना गया है। यह वही तीर्थ है जहाँ भगवान हृशिकेश साक्षात चतुर्भुज रूप में

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

विद्यमान रहते हैं। भगवान ने रैम्य मुनि को आशीर्वचन देकर कहा था कि, मैं सतयुग में वाराह रूप में, त्रेता में कार्तवीर्य, द्वापर में वामन देव तथा कलियुग में भरत नाम से इस तीर्थ पर निवास करूँगा। यह तीर्थ परम तीर्थव अग्नितीर्थआदि नामों से भी जाना जाता है। अग्नितीर्थ के रुप में इसे जानने के पीछे किवदन्ति है कि किसी समय इस तीर्थ में भयंकर अग्नि प्रज्वलित हो गई तब कुपित होकर भगवान शंकर ने अग्नि को शाप दिया। शाप से मुक्ति के लिए अग्नि ने यहाँ शिव की घोर तपस्या की जिससे अग्नि क्षण भर में भाान्त हो गयी, तब से यह अग्नि तीर्थ कहलाने लगा। ऋशिकेश में अनेक ऐसे स्थान हैं जो इस स्थान की पौराणिकता एवं ऐतिहासिकता को प्रदर्शित करते हैं। इनमें भरत मन्दिर, नगर की जीवन रेखा पवित्र नदियों का संगम त्रिवेणी घाट, लक्ष्मण मन्दिर, लक्ष्मण झूला, रामझूला, चन्द्रे वर मन्दिर, सोमे वर मन्दिर, वीरभद्रे वर मन्दिर, आदि प्रमुख हैं। भरत मन्दिर बहुत प्राचीन है, इसके बारे में स्वयं भगवान विश्णु ने रैम्य मुनि से कहा था कि कलियुग में मैं भरत नाम से इस स्थान में वास करूँगा। नगर की जीवन रेखा पवित्र नदियों का संगम त्रिवेणी–घाट जिसके बारे में यह किंवदन्ति है कि, महान ऋशियों की तपस्या से वशीभूत होकर यमुना और सरस्वती इस स्थान पर गंगा से मिली थी, यह स्थान गंगा, सरस्वती व यमुना का गुप्त संगम माना जाता है। लक्ष्मण मन्दिर में लक्ष्मण ने ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति के लिए निराहार रहकर बारह वर्शों तक तपस्या की थी। चन्द्रे वर मन्दिर जिसके बारे में उल्लेख है कि गौतम ऋशि ने अपनी पुत्री के विवाह मुहूर्त पर चन्द्र के उदय न होने पर उसे भााप दे दिया था। भााप मुक्ति हेतु चन्द्र ने यहाँ भगवान शिव की उपासना की जिससे यह तीर्थ चन्द्रे वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सोमेश्वर मन्दिर के बारे में केदारखण्ड में उल्लेख है कि, ईशानकोण में भक्तों को तारने वाला शुभदायक सोमे वर महादेव शिवलिंग है। इस स्थान पर सोमशर्मा नामक तपस्वी ने तप किया था। भगवान शंकर ने सोमशर्मा को यहाँ दर्शन दिये थे। वीरभद्र मन्दिर गंगा एवं रम्भा नदी के संगम के ऊपर एक टीले पर अवस्थित है, स्वयं वीरभद्र महादेव ने इस स्थान पर शिवलिंग की स्थापना की थी। वीरभद्र शिव का भैरव स्वरूप है। इसकी उत्पत्ति दक्ष यज्ञ के विध्वंस हेतु हुई थी।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उपरोक्त उल्लिखित स्थल इस स्थान की पौराणिकता को प्रदर्शित करते हैं। पौराणिकता के साथ–साथ यह ऐतिहासिक स्थल भी है। कुणिन्द एवं कत्यूरी शासकों ने यहाँ शासन किया था। तोमर नरेशों ने ग्याहरवीं शताब्दी, चौहान सामन्तों ने बारहवीं भाताब्दी में यहाँ राज किया था। परन्तु 1398 ई0 में तैमूर लंग ने इस भाहर को विनश्ट कर दिया था, जिसे पुनः निर्मित किया गया और पन्द्रहवीं भाताब्दी में गढ़वाल राज्य के संस्थापक राजा अजयपाल ने ऋशिकेश को तत्कालीन राजा मंगलसेन से छीनकर अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया था।

उन्नीसहवीं शताब्दी तक यह एक छोटा कस्बा था, जहाँ मकर–संक्रांति तथा वैशाखी को छोटे–छोटे मेलों का आयोजन होता था। वाल्टन ने भी इसे कुछ मकानों, मन्दिरों व दुकानों का मिला–जुला छोटा भाहर बताया है। यहाँ की जनसंख्या में नागरिकों की अपेक्षा साधू–सन्यासियों की संख्या अधिक थी। साधू–सन्यासियों के कारण 1880 ई0 में यहाँ 1008 स्वामी विशुद्धानन्द जी (बाबा काली कमली वालों) ने धर्मशाला की स्थापना की। स्वामी विशुद्धानन्द जी का जन्म संवत् 1882 में पंजाब के गुजरात जिले (वर्तमान पाकिस्तान) के जलालपुर कोकना नामक गाँव में हुआ था। इनका प्रारम्भिक नाम विसवा सिंह था, 24 वर्ष की उम्र में माता–पिता का देवासान हो गया था। इसके कुछ समय बाद ये काशी गये और वहाँ स्वामी शंकरानन्द जी से दीक्षा ली और तब से ये स्वामी विशुद्धानन्द बन गये। इसके पश्चात संवत् 1937 (सन् 1880 ई0) में स्वामी जी उत्तराखण्ड़ की यात्रा पर आये, यहाँ आने पर इन्होंने अनेक कष्टों को सहन किया, पानी के अभाव को दूर करने के लिए इन्होंने ऋशिकेश में एक पेड़ के नीचे प्याऊ की स्थापना की, उसके पश्चात जगह–जगह भ्रमण कर स्वामी जी ने थोड़ी धन राशि अर्जित की और संवत् 1941 में ऋशिकेश में अन्नक्षेत्र स्थापित किया। ये काला कंबल ओढ़ते थे इसलिए बाबा काली कमली के नाम से प्रसिद्ध हुए, बाबा जी के प्रयास से यहाँ यात्रियों एवं साधू–सन्तों को रहने खाने की सुविधा प्राप्त हो गयी। 1889ई0 में पंजाब सिन्ध क्षेत्र और 1890ई0 में जयराम अन्नक्षेत्र की स्थापना यहाँ हुयी। यह स्थान प्राचीन काल से ही हिन्दू धर्म के आधार स्तम्भ, श्रद्धा के केन्द्र चार धामों श्री बद्रीनाथ, श्री केदारनाथ, गंगोत्री व यमनोत्री जाने वाले मार्गों का मुख्य स्थल होने के कारण प्रमुख पड़ाव स्थल के रूप

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

में विकसित होने लगा। 1910 ई0 के बाद यहाँ अनेक धर्म ाालाओं एवं होटलों का निर्माण हुआ। 1922 ई0 में ऋशिकेश को ''नोटिफाईड एरिया'' घोशित किया गया और सरकार द्वारा सहायतार्थ कमेटी की स्थापना की गई।सन् 1926 ई0 में ऋशिकेश को रायवाला से रेलवे लाइन द्वारा जोड़ा गया। आवास एवं यातायात व्यवस्था के विकास के कारण शहरीकरण में वृद्धि होने लगी, परन्तु शहरीकरण की तीव्र गति से प्रगति स्वतंत्रता के पश्चात् ही हुई। 1947 ई0 में भारत–पाक विभाजन के समय अनेक शरणार्थी यहाँ आकर बस गये। अब तक जहाँ ऋशिकेश घने जंगलों से आच्छादित था तथा हरिद्वार व देहरादून जाने के लिए केवल पगडंडी वाला मार्ग था, इसके पश्चात् मूलभूत ढाँचे का विकास शुरू हुआ, 1948 ई0 में ऋशिकेश विद्युतीकृत हुआ, हरिद्वार में सन् 1950ई0 में होने वाले कुम्भ के दौरान अनेक मार्गों का निर्माण होने से अवागमन हेत सुगमता भी बड़ी। शहर की स्थिति में मुख्य परिवर्तन 1956 ई0 में कीर्तिनगर में मोटर पुल के निर्माण से आया। इस पुल के बनने से ऋशिकेश प्रमुख व्यापारिक मण्डी बन गयी। इससे पूर्व कोटद्वार गढ़वाल की प्रमुख मण्डी थी। लेकिन इस पुल के निर्माण से कोटद्वार को काफी नुकसान हुआ और गढ़वाल के उत्तरी क्षेत्रों का कोटद्वार से सम्पर्क न्यूनतम हो गया। वहीं ऋशिकेश व्यावसायिक नगर के रूप में विकसित हो गया। इसके पश्चात् 1962 ई0 में ऋशिकेश से 2 किमी0 दक्षिण दिशा में वीरभद्र नामक स्थान पर आधुनिक औशधियों के निर्माण हेतु एक वि ाल कारखाने (आई0डी0पी0एल0) की स्थापना की गई। इस कारखाने ने यहाँ की सामाजिक, आर्थिक स्थिति बदल कर रख दी। आज तक लोग यहाँ धार्मिक महत्ता व पवित्रता के कारण आते थे। इसके बाद अनेक लोग नौकरी पेशे के लिए भी यहाँ आने लगे, फलस्वरूप भाहर की जनसंख्या में एकाएक वृद्धि हो गयी जो कि शहरीकरण का प्रमुख कारक बन गया और इस स्थल ने भाहर का रूप धारण कर दिया। ऋशिकेश के विकास में यहाँ की नगरपालिका ने महत्वपूर्ण कार्य किये। नगर विकास के लिए 1910 ई0 में ऋशिकेश सुधार कमेटी नामक एक संस्था बनायी गयी। 1922 ई0 में इस संस्था को उच्चीकृत करके 'नोटिफाइट एरिया कमेटी' नाम दिया गया। स्वतंत्रता के पश्चात् 1949 ई0 में संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) सरकार की विज्ञप्ति संख्या 5856/11–ए–692–49 लखनऊ, दिनांक 25 जुलाई, 1949ई0 द्वारा ऋशिकेश में नगरपालिका की स्थापना हुई। 5 दिसम्बर, 1966 ई0 को

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उत्तर प्रदेश सरकार के नोटिफिकेशन संख्या 1109 (III) / X I- II – 1966 के द्वारा नगरपालिका ऋशिकेश को प्रथम श्रेणी की नगरपालिका घोशित किया गया।

सन्दर्भ :–

i. स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, 1994, प्रभात मिश्र शास्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 12, इलाहाबाद।

ii. अधिकारी, प्रहलाद सिंह, 1990, ''हिमालय पर्यटन उद्योग'' पृश्ठ –125, नार्दन बुक सैंटर, नई दिल्ली।

iii. कल्याणी, तीर्थांक, वर्श 31, संख्या 9, पृष्ठ –65, गीताप्रेस गोरखपुर।

iv. ध्यानी, सुमन, 2003, ''केदारखण्ड के प्रमुख धार्मिक स्थल'', .

v. पोखरियाल, बंशीधर, 1986, ''पावन तीर्थ ह्रशीकेश'', प्रकाशक महन्त अशोक प्रपन्न शर्मा श्री भरत मन्दिर, ऋशिकेश।

vi. वन पर्व, महाभारत, 1997, उं0 82, गीताप्रेस, गोरखपुर।

vii. ब्रह्मपुराण, अध्याय–39, श्लोक 71, गीताप्रेस, गोरखपुर।

viii. वाल्टन, एच0जी0, ''डिस्ट्रीक गजेटियर देहरादून,'' गवरमेंट प्रेस।

ix. 1008, स्वामी श्री विशुद्धानन्द जी महाराज– पत्रिका, प्रकाशित सम्वत्, 2051, प्रकाशक, राय बहादुर वि वे वर लाल, मोती लाल, हलवासिया ट्रस्ट, कोलकाता।

x. डबराल, पार्थसारथी, वर्मा, रामकिशोर, 1991– ''ऋशिकेश तब और अब'', साप्ताहिक गढ़वाल मण्डल का गढ़वाल यात्रा पर्यटन विषेशांक हिमवन्त प्रेस, कण्डोलिया मार्ग, पौड़ी।

xi. सिंह, सुरेन्द्र, 1995, ''अर्बनाइजेशन इन गढ़वाल हिमालया'', एम0डी0 पब्लिकेशन, प्रा0लि0, नई दिल्ली।

xii. वरूण, डागली प्रसाद, 1979,– ''यू0पी0 डिस्ट्रीक गजेटियर'', गवरमेंट प्रेस लखनऊ।

xiii. सेमवाल, गोविन्दानन्द, 2003, उत्तराखण्ड प्रकाशन, अजबपुर, देहरादून,।